UG study material for students of History

1. Subject - History
2. B.A. Part III Hons.
3. Paper VI (History of India 1765-1950)
4. Topic : 19 वीं - 20 वीं शताब्दी में सामाजिक और धार्मिक सुधार आन्दोलन के परिणाम या प्रभाव
   (Results or Effects of the Socio-religious movements in 19th - 20th Century)
5. By

Dr. Rajiv Nayan
Associate Professor,
Dept. of History,
Jagjiwan College, Ara
(V.K.S.U, Ara)

Scanned by CamScanner

B.A. III History (Hons.); Paper VI (History of India 1765-1950)

19 वीं 20 वीं शताब्दी में सामाजिक और धार्मिक सुधार आंदोलन के परिणाम -

19 वीं शताब्दी में हुए सामाजिक और धार्मिक सुधार-आंदोलनों के परिणामस्वरूप भारतीयों की मानसिकता में बदलाव आया। नई चेतना का विकास हुआ। इसने भारतीय धर्म, समाज, साहित्य, राजनीति एवं कला-कौशल को प्रभावित किया। फलस्वरूप, भारत में पुनर्जागरण की-सी स्थिति व्याप्त हो गई। प्रत्येक क्षेत्र में सुधार एवं विकास किए गए। इन प्रयासों के फलस्वरूप 20 वीं शताब्दी में भारतीयों में आमूल परिवर्तन आया। इसने राष्ट्रीयता के विकास में भी मदद पहुँचाई। वस्तुतः, निम्नलिखित बिन्दुओं को भारत में सामाजिक और धार्मिक सुधार आंदोलन के परिणाम के रूप में दिखलाया जा सकता है -

(1) धार्मिक स्थिति में परिवर्तन - भारत के विभिन्न संप्रदायों की धार्मिक स्थिति अत्यंत ही जटिल एवं रूढ़िवादी थी। हिंदू धर्म विशेष रूप से कर्मकांडी, अंधविश्वासी एवं रूढ़िवादी था। अतः, अनेक धर्मसुधारकों ने हिंदू धर्म के उत्थान, इसको व्यापक एवं सर्वग्राही बनाने का प्रयास किया। इसके लिए अनेक धर्मसुधारकों ने प्राचीन भारत के स्वर्णिम अतीत को उदाहरण के रूप में पेश किया, अंधविश्वासों को समाप्त करने का प्रयास किया; बलि, यज्ञ, एवं पुरोहितों के महत्व को नकारा तथा सत्य, ज्ञान, चिंतन-मनन और वेद का सहारा लेकर भारतीय धर्म का पुनरुत्थान

Scanned by CamScanner

किया। इस क्षेत्र में ब्रह्म समाज, आर्य समाज, प्रार्थना समाज, थियोसोफिकल सोसायटी एवं रामकृष्ण मिशन ने महत्त्वपूर्ण कार्य किये। इनके प्रयासों से भारतीयों की धार्मिक जड़ता समाप्त हुई। इसी प्रकार, मुसलमानों, सिक्खों, पारसियों एवं ईसाइयों आदि ने भी अपने-अपने धर्म को नई दिशाएँ प्रदान कीं।

(2) सामाजिक नवजागरण – धर्म की ही तरह भारतीय समाज भी अनेक कुप्रथाओं से ग्रस्त था। जाति-प्रथा, छुआछूत की भावना, अशिक्षा, बाल-विवाह, बहु-विवाह, शिशु-वध और पर्दा-प्रथा जैसी कुप्रथाएँ हिन्दू समाज का कोढ़ बन चुकी थीं। स्त्रियों एवं विधवाओं की स्थिति अत्यंत ही दयनीय थी। चूँकि इन सामाजिक व्यवस्थाओं को धार्मिक संरक्षण प्राप्त था, अतः इन्हें दूर करना दुष्कर कार्य था, परंतु जब धार्मिक क्षेत्र में सुधार-आंदोलन हुए तो उनके चलते सामाजिक सुधार भी संभव हो सके। कुछ उदारवादी अँग्रेजों ने भी इस क्षेत्र में भारतीयों की सहायता की। फलस्वरूप, 19वीं शताब्दी में सती-प्रथा, बाल-विवाह, बहु-विवाह, शिशु-वध, दास-प्रथा और छुआछूत को समाप्त करने का प्रयास किया गया। स्त्रियों की स्थिति, विशेषकर विधवाओं की दशा सुधारने की भी कोशिश की गई। स्त्रियों-पुरुषों की समुचित शिक्षा की व्यवस्था की गई। पर्दा-प्रथा को समाप्त करने एवं विदेश यात्रा पर से धार्मिक प्रतिबन्ध हटाने का भी

Scanned by CamScanner

(3)

प्रयास हुआ। इस दिशा में ब्रह्म समाज, आर्य समाज और रामकृष्ण मिशन ने विशेष भूमिका निभाई। सर सैयद अहमद खाँ एवं अन्य सुधारकों ने भी अपने-अपने समाज की स्थिति में परिवर्तन लाकर इसे आधुनिकता के कगार पर खड़ा कर दिया।

(3) नई मानसिकता का विकास – धर्म सुधार-आंदोलनों ने भारतीयों की मानसिकता को मुक्त एवं स्वतंत्र किया तथा नवचेतना का जागरण किया। पाश्चात्य शिक्षा एवं वैज्ञानिक उपलब्धियों के प्रभाव में आकर वे अपनी अंधविश्वासी एवं रूढ़िवादी मान्यताएँ त्यागने लगे। अब वे तर्क एवं बुद्धि का सहारा लेकर मानवतावादी दृष्टिकोण अपनाने लगे। उनकी कूपमंडूकता भी समाप्त हो गई। वे पाश्चात्य जगत में होनेवाली राजनीतिक और सामाजिक क्रांतियों से परिचित और प्रभावित हो उठे। उनके दिलों में भी स्वतंत्रता, समानता और बंधुत्व की भावना जगी। आत्मसम्मान और देशभक्ति की भावना भी इन सुधार-आंदोलनों ने प्रज्वलित कर दी।

(4) अतीत का उजागर होना – 19 वीं शताब्दी की एक महत्वपूर्ण घटना थी – भारत के गौरवमय अतीत की खोज। इस क्षेत्र में यूरोपीय विद्वानों ने

Scanned by CamScanner

निःस्वार्थ भाव से कार्य किया। मार्शल, डॉ० बुलर, एलोट, पर्सी ब्राउन, हैवेल आदि इतिहासकारों ने प्राचीन स्मारकों की खोज करके भारत के गौरव को उजागर किया। इससे भारतीय लोगों ने भी अपने प्राचीन गौरव की खोज करने की दिशा में कार्य प्रारंभ किया। सिन्धु संस्कृति की खोज; अशोक के शिलालेख व इसकी लिपि को पढ़ना; विभिन्न साम्राज्यों के निर्माण, उत्थान एवं पतन की गाथाएं; समुद्र पार भारतीय संस्कृति के प्रसार की कहानी; अजन्ता-एलोरा के चित्रों की खोज इत्यादि से राष्ट्रीय गौरव की भावना को और अधिक प्रोत्साहन मिला। अनेक इतिहासकारों ने भारतीय इतिहास का निर्माण किया जिनमें डॉ० भण्डारकर, सर यदुनाथ सरकार, गोविन्द सानाडे, स्मिथ, टॉड, ग्राण्ट डफ, एलफिन्स्टन, सरदेसाई, हरप्रसाद शास्त्री आदि का नाम प्रमुख है।

5) <u>प्राचीन भारतीय साहित्य की खोज</u> — पुनरुत्थान आन्दोलनों के कारण प्राचीन वैदिक एवं बौद्ध साहित्य की तलाश आरंभ हुई जिन पर सदियों से गर्द (धूल)

Scanned by CamScanner

पड़ी हुई थी। इस दिशा में भी यूरोपीय विद्वानों की अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका रही। उन्होंने हिन्दुओं के प्राचीन साहित्य की खोज की, उसका प्रकाशन कराया तथा अनेक यूरोपियन भाषाओं में उनका अनुवाद कराया। विल्किन्स ने भगवद्गीता का अनुवाद किया, विलियम जोन्स ने अन्य ग्रंथों के साथ-साथ 'मनुस्मृति', 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' और संस्कृत के अनेक नाटकों का संकलन किया। मैक्समूलर ने वेदों का अंग्रेजी में अनुवाद किया। उनके सम्पादकत्व में विशाल मात्रा में प्राचीन धर्मग्रन्थों का अनुवाद किया गया। ये अनुवाद सैक्रेड बुक्स ऑफ द ईस्ट सीरीज (Sacred Books of the East Series) में पचास खंडों में प्रकाशित हुए। कोलब्रुक ने पाणिनी के अष्टाध्यायी (व्याकरण ग्रंथ) और हितोपदेश जैसे अनेक संस्कृत ग्रंथों का अनुवाद किया। इस प्राचीन भारतीय साहित्य की खोज से न केवल भारतीयों को ही अपने धर्म, दर्शन और ज्ञान तथा राष्ट्र में श्रद्धा उत्पन्न हुई, बल्कि पश्चिमी देशों में भी भारत

Scanned by CamScanner

का सम्मान बढ़ा।

19वीं सदी के आन्दोलनों ने भारतीय साहित्य को नवीन दिशा प्रदान की। तत्कालीन साहित्यकारों में भी देश प्रेम और राष्ट्रीयता की भावना प्रज्वलित हुई जिसके फलस्वरूप उनके द्वारा लिखित साहित्य में यह भावना परिलक्षित-परिपुष्ट हुई। इस भारतीय पुनर्जागरण ने भारतीय प्रादेशिक भाषाओं के निर्माण में काफी सहयोग दिया। राजा राममोहन राय, अक्षयकुमार दत्त, ईश्वरचन्द्र विद्यासागर, मधुसूदन दत्त, बंकिमचन्द्र चटर्जी, शरतचन्द्र, मोहम्मद इकबाल और प्रेमचंद जैसे मनीषियों ने इस साहित्यिक निर्माण को आरंभ किया और धीरे-धीरे ऐसे साहित्य का निर्माण हुआ जो नवीन, मौलिक, आधुनिक और प्रगतिशील विचारधारा का प्रवर्तक बना। राष्ट्रीयता के विकास में इनकी महती भूमिका रही।

(6) वैज्ञानिक भावना का प्रसार- पुनर्जागरण से वैज्ञानिक एवं अनुसंधान की भावना का भी विकास हुआ। 1784 ई० में कलकत्ता में एशियाटिक सोसाइटी ऑफ बंगाल की स्थापना हुई। 1861 ई० में भारतीय पुरातत्व

(7)

सर्वेक्षण (Archaeological survey of India) की स्थापना हुई। तत्पश्चात विभिन्न स्थानों पर संग्रहालयों (Museums) की स्थापना की गयी जहाँ ऐतिहासिक सामग्रियों को रखने के अलावा शोध संस्थान भी खोले गये। फलस्वरूप, प्राचीन स्मारकों एवं स्थलों की खोज की गयी। विज्ञान एवं दर्शन के क्षेत्र में भी प्रयास किए गये। इस काल में गणित के क्षेत्र में रामानुजम और विज्ञान के क्षेत्र में जगदीशचन्द्र बसु ने भारत की अन्वेषण योग्यता का नेतृत्व किया। सर सी. वी. रमण, डॉ० मेघनाद साहा, एस. एस. भटनागर, एस. सी. राय, एस. चन्द्रशेखर आदि वैज्ञानिकों ने विज्ञान के क्षेत्र में भारत का नाम गौरवान्वित किया।

(7) मध्यम वर्ग का उदय - भारतीय पुनर्जागरण आंदोलन के दौरान एक नये मध्यम वर्ग का उदय हुआ। अँग्रेजी शिक्षित व्यक्तियों का महत्व बहुत अधिक बढ़ गया। शिक्षक, वकील, वैज्ञानिक, डॉक्टर, पत्रकार आदि समाज में काफी प्रतिष्ठित

Scanned by CamScanner

हो गये थे और इन्हीं से एक नये मध्यम वर्ग का उदय हुआ। इन व्यक्तियों को राष्ट्रीय भावनाओं का अधिक ज्ञान था तथा इनमें एकता, दृढ़ता तथा आत्म विश्वास की भावना भी थी। इसी मध्यम वर्ग ने राष्ट्रीयता की भावना को जनमानस में संचारित किया।

(8) आर्थिक प्रभाव - एक नये शिक्षित वर्ग के उदय के पश्चात् इनके द्वारा भारतीय जनमानस में प्रगतिशीलता के संचरण से लोगों को महसूस हुआ कि भारत यूरोपीय देशों की तुलना में कितना पिछड़ गया है। इन्हें लगा कि भारतीय दरिद्रता को दूर करने का एकमात्र उपाय उद्योग-धंधों का विकास है। फलस्वरूप भारत में भी नये उद्योगों एवं व्यवसायों का सूत्रपात हुआ जिससे जन-साधारण का जीवन-स्तर में अपेक्षाकृत बदलाव आया।

(9) राजनीतिक प्रभाव - भारतीय सामाजिक-धार्मिक सुधार आन्दोलनों ने जनसाधारण में राष्ट्रीय चेतना जाग्रत की। पुनर्जागरण की भावना से भारतीयों में सांस्कृतिक एकता तथा राष्ट्रीय गौरव का निर्माण हुआ 'महान भारतवर्ष' की अवधारणा को प्रोत्साहित किया। पुनरुद्धार आंदोलन ने

Scanned by CamScanner

सभी नेता राष्ट्रप्रेमी थे; चाहे वे साहित्यकार थे, कलाकार या समाज सुधारक। उन्होंने भारतीय संस्कृति, धर्म और गौरव की रक्षा की। इन आन्दोलनों के फलस्वरूप अनेक राजनीतिक सुधार भी हुए। भारतीय जनता अपने राजनीतिक अधिकारों के प्रति जाग्रत हुई। उसने अपने अधिकारों को जाना और उन्हें प्राप्त करने के लिए संघर्ष किया। अतः, राजनीतिक आन्दोलनों की आधारशिला का निर्माण भी पुनरुद्धार आन्दोलनों के परिणामस्वरूप ही प्रारंभ हुआ।

सुधार आंदोलनों का नकारात्मक प्रभाव -

19 वीं सदी के सुधार आन्दोलन मुख्यतः शहरी सम्पन्न एवं उच्च वर्ग तक ही सीमित रहे तथा कोई भी आन्दोलन देश के गाँव एवं किसानों तथा शहरों के गरीब लोगों तक नहीं पहुँच सका। इसके अतिरिक्त, आंदोलन के कार्यकर्ताओं ने अतीत की महानता और अपने-अपने धर्मग्रंथों

Scanned by CamScanner

से प्रमाण देने की प्रवृत्ति का सहारा लिया।
उनकी इन प्रवृत्तियों ने लोगों में साम्प्रदायिकता
के आधार पर ~~विभ~~ विभाजित होने की गलत
परम्परा को अप्रत्यक्ष रूप से बढ़ावा दिया।
सुधार-आंदोलनों में संस्कृति के कुछ
चुनिंदा पहलुओं को ज्यादा महत्व दिये जाने
से संस्कृति के अन्य क्षेत्र जैसे-स्थापत्य,
संगीत, चित्रकला, मूर्तिकला इत्यादि उपेक्षित
हुए। हिन्दू समाज सुधारक अपनी विचारधारा
में प्राचीन इतिहास एवं संस्कृति में ही
संकुचित होकर रह गये। उन्होंने मध्यकालीन
इतिहास को बिल्कुल भुला दिया, जबकि
भारतीय इतिहास में मध्यकाल का अपना
विशिष्ट महत्व है। प्राचीन संस्कृति के गुणगान
से वे जातियाँ इनके विरुद्ध हो गयीं जिनके
पूर्वज प्राचीन काल में विभिन्न प्रकार के
शोषण एवं उत्पीड़न के शिकार रहे थे।
प्राचीन काल में पुरोहितों का सामाजिक एवं
धार्मिक एकाधिकार एवं वर्चस्व था। इसके
कारण भी कई जातियाँ विशेषतः निम्न

Scanned by CamScanner

जातियाँ इन आन्दोलनों में सक्रिय नहीं हुईं। कई मुस्लिम महत्ववर्गियों ने मुस्लिम समाज का पश्चिमीकरण का प्रयास किया। इस क्रम में अपने धर्म की श्रेष्ठता स्थापित करने के प्रयास से साम्प्रदायिक सौहार्द को धक्का लगा। कालांतर में इसी मनोधारणा से लाभ उठाकर अंग्रेजों ने भारतीय समाज को विभाजित करने के कुत्सित प्रयत्न प्रारंभ कर दिये जिसकी दुःखद परिणति देश के विभाजन के रूप में सामने आई।

संक्षेप में, यह कहा जा सकता है कि सुधार आन्दोलनों का चरण भारतीय इतिहास में एक ऐसा अध्याय था जिसने न केवल भारतीय समाज एवं धर्म को नयी दिशा दी, अपितु नवीन अध्यायों का समावेश भी किया। इन आंदोलनों का ही प्रतिफल था कि उपनिवेशी शासन के विरुद्ध संघर्ष करने में पूरा भारतीय समाज उठ खड़ा हुआ तथा उसे जड़ से उखाड़ फेंका।

— By Dr. Rajiv Nayan
Dept. of History, J.J. College, Ara

Scanned by CamScanner